<5> 'मैला आँचल' की भाषा एवं शिल्प पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

हिंदी साहित्य के आँचलिक उपन्यासो की परंपरा में फणीश्वरनाथ रेणु का मैला आँचल अत्यंत महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। यह उपन्यास ग्रामीण जीवन का ऐसा दर्पण है जिसमें बिहार के पूर्णिया अंचल का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन अपनी समग्रता में दिखाई देता है। इस उपन्यास की लोकप्रियता और विशिष्टता का मुख्य कारण इसकी भाषा और शिल्प है। रेणु ने न केवल कथा और पात्रों को जीवंत बनाया है बल्कि भाषा को भी आँचलिक लोकजीवन से जोड़कर उपन्यास को अत्यंत प्रामाणिक और प्रभावशाली बना दिया है।

* भाषा की विशेषता

(i) आँचलिकता का सजीव रूप

रेणु की भाषा का सबसे बड़ा गुण उसकी आँचलिकता है। 'मैला आँचल' में प्रयुक्त भाषा बिहार के पूर्णिया क्षेत्र की मैथिली, मगही और भोजपुरी बोलियों से मिश्रित है। उदाहरण के लिए -
"का हो बाबू, अबकी बरिसा धानिया बढ़िया भेल।"
यह भाषा पात्रों की मूल संस्कृति और ग्रामीण परिवेश की सहज अभिव्यक्ति है।

(ii) लोकजीवन की गंध

उपन्यास में प्रयुक्त शब्द और वाक्य लोकजीवन से उठाए गए हैं। खेत, खलिहान, मेले, टोला, चौपाल और गली-कूचों की भाषा ने उपन्यास को जमीन से जोड़े रखा है।
जैसे :- "जइसे फगुआ में अबीर उड़त है, तइसे गाम में हंसी-ठिठोली उड़त रहल।"

(iii) लोकगीत और लोकभाषा का प्रयोग

रेणु ने उत्सवों, विवाह, दुख-सुख के अवसरो पर लोकगीतों को पात्रों के जीवन में पिरो दिया है। इससे भाषा भावनात्मक और कलात्मक दोनो बन गई है।
जैसे- विवाह के अवसर पर - "बटोहइया अइले हो राम, पियरिया पहिरले हो राम।"

(iv) संवादात्मक शैली

मैला आँचल की भाषा का महत्वपूर्ण पहलू इसका संवाद है। पात्र अपनी स्थिति, मानसिकता और समाज के स्तर के अनुसार बोलते हैं।
• डॉ. प्रशांत की भाषा में शिक्षित शिष्टता है।

• बुच्ची मइया और कमली जैसी स्त्रियों की भाषा में अपनापन और ग्रामीण औरतों की मनोभ

(v) सरलता और सहजता
यद्यपि भाषा में आंचलिक शब्दों की प्रचुरता है, लेकिन रेणु ने साधारणीकरण की प्रक्रिया अ
इसलिए पाठक अर्थ को सहजता से समझ लेता है और उपन्यास की भाषा बोझिल नहीं लगती।

* शिल्प की विशेषताएँ

(i) आँचलिकता की कलात्मक प्रस्तुति
उपन्यास का शिल्प लोकजीवन पर आधारित है। इसमें ग्राम्य-जीवन की संस्कृति, लोकाचार, अंधवि
रीति-रिवाज और वहाँ की समस्याएँ कथानक में स्वाभाविक रूप से समाहित हैं।

(ii) कथानक की संरचना
मैला आँचल का कथानक सीधी रेखा में न चलकर बहुप्रवाही है। इसमें अनेक छोटी-बड़ी घटनाएँ और
एक दूसरे से जुड़ते हुए आगे बढ़ते हैं। मसलन - गाँव की राजनीति, महामारी (चेचक), जातीय द्वेष,
शोषण आदि प्रसंग मिलकर कथानक को विस्तृत बनाते हैं।

(iii) लोकतत्वों का समावेश
शिल्प में लोकगीत, लोककथाएँ, लोकोक्तियाँ, रीति-रिवाज, ओझा-बिसाहरा, पर्व-त्योहार आदि का स
है। ये तत्व ग्रामीण जीवन को गहराई से उभारते हैं।

(iv) वर्णन-शैली की विविधता
कहीं-कहीं प्रकृति का दृश्यात्मक वर्णन मिलता है - जैसे खेत, नदी, मेले और पर्व। कहीं संवाद प्रधा
अपनाई गई है। कहीं-कहीं लेखक की टिप्पणी और आत्मकथ्य भी दिखाई देता है।

* निष्कर्ष :-
इस प्रकार मैला आँचल भाषा और शिल्प की दृष्टि से हिंदी उपन्यास परंपरा की अनुपम कृति है।
में आंचलिकता, लोकगीत, कहावतें और बोलचाल की सजीव शैली है। शिल्प में यथार्थ, आंचलि
बहुप्रवाही, कथानक और चरित्रों की जीवंतता है। अंततः कहा जा सकता है कि - मैला आँच
की सहजता और शिल्प की विविधता के कारण हिंदी उपन्यास की प्रतिनिधि आंचलिक कृति है।